RAJYA SABHA

Triday^ the 22nd June, 1962/the 1st *Asadha,* 1884 *(Saka)*

The House met at eleven of the clock, MR. CHAIRMAN in the Chair.

MR. CHAIRMAN: I have three announcements to make.

RESULT OF ELECTION TO THE COMMITTEE ON PUBLIC ACCOUNTS

MR. CHAIRMAN: ,As a result of the election held on the 21st June, 1962, the following Members are declared duly elected to be members of the Committee on Public Accounts:

1. Shrimati K. Bharathi
2. Shri Nawab Singh Chauhan
3. Shri Dahyabhai V. Patel
4. Shri Sonusing Dhansing Patil
5. Shri Lalji Pendse
6. Shri R P. N. Sinha
7. Shri Jai Narain Vyas.

RESULT OF ELECTION TO THE JOINT COMMITTEE ON OFFICES OF PROFIT

MR. CHAIRMAN; The following being the only Members nominated for election to the Joint Committee on Offices of Profit and their number being equal to the number of vacancies to be filled, I hereby declare them to be duly elected to the said Committee:

1. Shri G. Rajagopalan
2. Shri B. K. P. Sinha
3. Shri H V. Tripathi
4. Shri K. V. Raghunatha Reddy £. Shri Lokanath Miara

RESULT OF ELECTION TO THE COFFEE BOARD AND RAJGHAT AMADHI COMMITTEE

MR. CHAIRMAN: The following Members being the only candidates nominated for election 'to the bodies respectively shown against each, I hereby declare them duly elected to be members of the said bodies:

1. Shri T. S. Pattabiraman—Coffee Board
2. Shri Sadiq Ali—Raj ghat Samadhi Committee.

RESOLUTION RE. KEEPING STUDENTS OUT OF ACTIVE POLITIC

श्री ए० बी० वाजपेयी (उत्तर प्रदेश) : सभापति जी मैं प्रस्ताव करता हूं कि :

"इस सभा की यह सम्मति है कि विद्यार्थियों को सक्रिय राजनीति से अलग रखे जाने के बारे में कोई समझौता हो सके, इस दृष्टि से सरकार को देश के प्रमुख राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन बुलाना चाहिये ।"

यह और भी प्रसन्नता की बात है कि आपके अध्यक्ष चुने जाने के पहले दिन जब हम गैर-सरकारी प्रस्तावों पर विचार कर रहे हैं तो एक ऐसा प्रस्ताव सदन के सामने उपस्थित है जिसका शिक्षा के साथ गहरा सम्बन्ध है। एक शिक्षा शास्त्री के नाते आपने भी अपना सम्पूर्ण जीवन शिक्षा के क्षेत्र में बिताया है । इस सदन में और भी शिक्षा-शास्त्री विद्यमान हैं और उनके सामने मैं एक विद्यार्थी, जैसा हूं । जिस कालेज में मेरी पढ़ाई हुई, डा० वाडिया बाद में उसके प्रिंसिपल रह चुके हैं। मुझे विश्वास है कि एक विद्यार्थी के नाते जो कुछ भी मैं इस प्रस्ताव पर कहूंगा उसे सदन में गंभीर विचार का विषय बनाया जायेगा ।

[श्री ए० बी० वाजपेयी]

विद्यार्थी राजनीति में भाग लें या भाग न लें, यह एक बहुत पुराना सवाल है। लेकिन आज की परिस्थिति में जब हम एक स्वतंत्र राष्ट्र के नाते आर्थिक, सामाजिक पुनर्निर्माण के कार्य में लगे हैं, हमें इस बात का विचार करना होगा कि वे कौन सी मर्यादाएं हों जिनके अन्तर्गत हमारा विद्यार्थी समाज काम करे। आजादी की लड़ाई के दिनों में हमने विद्यार्थियों को विद्यालयों का बहिष्कार करने के लिए प्रेरित किया था क्योंकि उस समय हमारे सामने सबसे बड़ा प्रश्न देश की स्वतंत्रता का था। वह संकट का काल था जिसका निराकरण करने के लिए हमने लड़ाई के मैदान जैसी व्यूह-रचना की थी। लेकिन स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद जिस पृष्ठभूमि में विद्यार्थियों को राजनीति में आने के लिए प्रेरित किया गया था, वह पृष्ठभूमि बदल गई है। अब हमारे देश में हमारा शासन है। लोकतंत्रात्मक तरीकों से उस शासन को बदला जा सकता है। इसके लिए संविधान के अन्तर्गत हर एक उस व्यक्ति को जो बालिग है, जिसकी उम्र २१ साल की हो गई है, उसे मत देने का, अपने प्रतिनिधि चुनने का अधिकार है। स्पष्ट है कि मेरा प्रस्ताव संविधान द्वारा स्वीकृत या प्रदत्त मूलभूत अधिकारों के उपयोग के मार्ग में बाधक नहीं बन सकता। जो भी विद्यार्थी बालिग है और मताधिकार का उपयोग करना चाहता है, उसको तो निरुत्साहित करने का कोई सवाल पैदा नहीं होता। लेकिन सवाल यह है कि जो विद्यार्थी बालिग नहीं हैं, जिनके मस्तिष्क अभी अपरिपक्व हैं, जो जीवन के मार्ग पर केवल प्रथम चरण आगे बढ़े हैं, क्या उन्हें भी राजनीति में घसीटा जाय? क्या राजनैतिक दल विद्यार्थियों को अपने शतरंज का मोहरा बनायें? क्या कालेज और विश्वविद्यालय राजनैतिक दलों के लिए रंगरूट भरती करने के लिए एक जगह बन जायें? या क्या कोई ऐसी मर्यादाएं और सीमाएं निश्चित की जायें जिनके बाहर जाने देने से विद्यार्थियों को निरुत्साहित किया जाये।

सभापति जी, अभी देश में एक आम चुनाव सम्पन्न हुआ है। उस चुनाव में एक बात यह भी देखने में आई कि जानमें, अनजान में, छोटे छोटे बच्चे चुनाव के अभियान को आगे बढ़ाने के लिए प्रयुक्त किये गये। किसने प्रयुक्त किये, कहां प्रयुक्त किये गये, यह चर्चा आज अधिक महत्व नहीं रखती और किसी भी दल पर दोषारोपण करने का मेरा उद्देश्य नहीं है। स्पष्ट है कि इस सम्बन्ध में जब तक सभी राजनैतिक दलों में एक समझौता नहीं होगा, इस प्रकार की प्रवृत्ति को रोका नहीं जा सकता। सब इस बात को स्वीकार करेंगे, कि छोटे छोटे बच्चे चुनाव के चक्कर में न पड़ें यह बहुत आवश्यक है। यह प्रवृत्ति देश के भविष्य के लिए घातक है। यह स्वास्थ्यकर नहीं है। लेकिन अभी तक इस पर स्वेच्छा से कोई रोक लगाने का प्रयत्न नहीं हुआ है। जब तक सब राजनैतिक दलों में इस विषय पर कोई समझौता न हो जाय, तब तक शायद इस बात को रोकना भी कठिन होगा।

इस समस्या का दूसरा पहलू भी है। विद्यार्थियों का पहला काम विद्याध्ययन करना है। विद्यार्थी जीवन तैयारी का नाम है। शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक शक्तियों का विकास कर जीवन संग्राम में उतरने के लिए हर एक विद्यार्थी अपने को तैयार करे, इसके लिए विद्यार्थी अवस्था है। लेकिन अगर विद्यार्थियों को सक्रिय राजनीति में भाग लेने से निरुत्साहित नहीं किया जायगा, तो फिर वे अधकचरे दिमाग ले करके राजनीति में आयेंगे। और राजनीति को भी अधकचरा बनायेंगे। वह न अपना भला कर सकेंगे न राजनीति के द्वारा देश का भला कर सकेंगे। विद्यार्थी राजनीति की चर्चा

करें, राजनीति-शास्त्र का अध्ययन करें, तर्क-वितर्क करें, राजनैतिक विषयों के अध्ययन के लिये अध्ययन-मंडल की स्थापना करे लेकिन अध्ययन के और अध्यवसाय के क्षेत्र को पार करके विद्यार्थी चुनाव की राजनीति में, सत्ता प्राप्ति की राजनीति में पड़ जायें, अपनी पढ़ाई एक तरफ कर दें, तो इससे किसी का कल्याण होने वाला नहीं है। आज देश का दुर्भाग्य है कि राजनीति हमारे सम्पूर्ण जीवन पर हावी हो गई है। राजनीति जीवन का एक अंग है, सम्पूर्ण जीवन नहीं है, लेकिन जैसे किसी अस्वस्थ शरीर में शरीर का जो अंग कष्ट-पीड़ित है सारे शरीर का ध्यान उसी कष्ट की तरफ लगा रहता है, वैसे ही शायद राजनीति एक ऐसा क्षेत्र है जो कि सबका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है। इस दृष्टि से हमारे जीवन में एक असंतुलन दिखाई देता है। समाज की धारणा के लिये केवल राजनीति आवश्यक नहीं है, अर्थ है, साहित्य है, संस्कृति है, कला है और प्राचीन काल में कभी भी समाज के जीवन के जीवन को राजनीति के रथ ने इतना नहीं बांधा है। शासन चलता रहा, बदलता रहा, मगर समाज की स्थिति में हमने कोई उथल-पुथल नहीं होने दी। दिल्ली के शासन बदले मगर समाज की मान्यतायें टिकी रहीं जिससे समाज आक्रमणों के बीच भी अपना संतुलन बनाये रख सका। अगर हमारे जीवन के सारे सूत्र राजनीति के रथ से जुड़ हुए तो उस राजनीति में परिवर्तन आते ही हमारे सारे जीवन में एक संकट पैदा हो जाता, मगर ऐसा नहीं हुआ। राज्य और शासन के अतिरिक्त हमने और भी खम्बे खड़े किये जिनके ऊपर समाज का भवन टिका। हमारे विश्वविद्यालय, हमारे गुरुकुल, हमारे शिक्षा के केन्द्र जो राज्य और शासन के प्रभाव से अलग थे, संस्कार डालने की ऐसी भूमि थी जहां शासन से निरपेक्ष हो कर हम छोटे छोटे बच्चों के दिलों और दिमागों पर संस्कार डालने का कार्य बिना किसी खण्डन के करते रहे। अतः स्वतंत्रता के बाद हमें राजनीति पर आवश्यकता से अधिक बल नहीं देना चाहिये। राजनीति अपनी जगह पर रहे। अगर वह समाज के सम्पूर्ण जीवन पर हावी हो जाये तो यह किसी के लिये ठीक नहीं है। जब हम इस प्रकार का एक संतुलित, समन्वित दृष्टिकोण को लेकर चलेंगे तो फिर यही कहेंगे कि विद्यार्थी पहले देश के बारे में, समाज के बारे में, इतिहास के बारे में, संस्कृति के बारे में, अपनी परम्पराओं के बारे में अधिक ज्ञान प्राप्त कर उनके प्रति निष्ठावान हों यह आवश्यक होगा और वह किसी दल के साथ अपने को बांध दें यह आवश्यक नहीं होगा। लेकिन, आज स्थिति यह है कि जीवन का हर एक क्षेत्र राजनीति से जकड़ दिया गया है और राजनीति के सामने सांस्कृतिक क्षेत्र की, साहित्यिक क्षेत्र की कला के क्षेत्र की उतनी कीमत नहीं रही है हमारे विद्यार्थियों पर भी इसका असर होता हुआ दिखाई देता है और वे समझते हैं कि राजनैतिक क्षेत्र में कोई ऊंचा पद प्राप्त करना, मंत्री बनना, पार्लियामेंट का मेम्बर बनना, विधान सभा का सदस्य बनना यही सबसे बड़ा महत्वाकांक्षा का काम हो सकता है, जब कि स्थिति यह है कि हमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार करने वाले लोग चाहियें, हमें डाक्टर चाहियें, हमें टेक्नीशियंस चाहियें, हमें इंजीनियर चाहियें, जो कि राजनीति में रुचि रख कर राजनीति को जीवन का सर्वस्व मान कर न चलें। अब, अगर हम बाल्यावस्था से विद्यार्थियों को राजनीति की ओर आकृष्ट करेंगे तो उससे केवल उनकी पढ़ाई पर ही व्याघात उत्पन्न नहीं होगा वरन उनका दृष्टिकोण भी एकांगी बनेगा। जीवन के और मूल्य उनके सामने पिछड़ जायेंगे और राजनीति जो कि बदलती रहती है, राजनीति जो कि कटुता पैदा करती है, राजनीति जो कि बांटती है, राजनीति जो कि मनों में जहर भरती है वह राजनीति उनके जीवन में स्थान बना कर बैठ जायेगी।

इस सम्बन्ध में एक बात का हम और

[श्री ए० बी० वाजपेयी]

भी विचार करें। ग्राज देश में जो राजनीति है उससे कोई संतुष्ट नहीं हो सकता, हम सब उस राजनीति में पड़े हुए है यह बात अलग है, मगर उस राजनिति की धारा को ग्रौर भी स्वच्छ बनाया जाय, परिमार्जित किया जायें, उसे ग्रौर भी सिद्धांतवादी बनाया जायें इससे किसी को इंकार नहीं हो सकता, मगर वस्तुस्थिति यह है कि राजनीति में एक संकुचित स्वार्थ भरा जाता है, साम्प्र-दायिकता, जातीयता, क्षेत्रीयता को बढ़ावा दिया जाता है । अब अगर राजनीति स्वस्थ होती ग्रौर विद्यार्थी उसमें भाग लेते तो शायद इतनी ग्रापत्ति नहीं होती , मगर ग्राज की राजनीति उतनी स्वस्थ नहीं है कि उसमें अगर विद्यार्थी भाग लें तो फिर जैसे ग्राप लोग उसमें भाग लेते हुए भी, कमल की तरह से कीचड़ में रह कर भी, उससे अलग रहने का प्रयत्न करते हैं वैसे ही जिनके दिमाग विकसित नहीं हैं वे उस कीचड़ में फंस हुए बिना रह सके । राजनैतिक ग्राधारों पर हम देश में अलग अलग दलों का निर्माण करते हैं, इस सदन में भी भिन्न भिन्न विचारों के प्रतिनिधि होने के नाते हम यहां बैठते हैं, हममें परस्पर में कटुता भी होती है, विचारों के लेनदेन में तीखापन भी ग्राता है, मगर विचारों की भिन्नता के होते हुए भी हम यह अनुभव करते हैं कि अंत-तोगत्वा हम सब देश की सेवा के लिये बने है ग्रौर कोई भी मतभेद राष्ट्र की सेवा के मार्ग में बाधक नहीं बन सकता, अगर मतभेद है तो वे भी सेवा किस ढंग से की जानी चाहिये, इसको लेकर हैं , लेकिन यह विवेक छोटे वद्यार्यो नहीं रख सकते । वे राजनीति की असहिष्णुता ग्रहण कर लेते हैं, राजनीति की कट्टरता अपना लेते हैं ग्रौर जो बड़ा लक्ष्य है वह उनकी दृष्टि से तिरोहित हो जाता है । कई प्रान्तों में सीमा-विवाद चल रहा है, नदियों के पानी को लेकर कुछ मतभेद पैदा हो गये है, किस प्रदेश का कौनसा नगर किस प्रदेश में रहना चाहिये यह भी कभी कभी विवाद का विषय बन जाता है ग्रौर राजनैतिक दल इसको उठाते है । अब, हम कल्पना करें कि अगर हमारे विद्यार्थी भी इन झगड़ों में पड़ जायें तो क्या हो ? जो सम्पूर्ण देश की सीमा पर चलने वाले झगड़े हैं उनको वे भूल जायें ग्रौर प्रदेश की सीमाग्रों के झगड़े में पड़ जाये तो कोई भी इस बात का स्वागत नहीं कर सकता । ग्रासाम ग्रौर बंगाल में जो भी दंगे हुए उसके लिये कहा जाता है कि उसमें कुछ विद्यार्थियों ने ग्रागे बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया ग्रौर बाद में तो एक विद्यार्थी नेता शायद विधान-सभा के सदस्य भी चुन लिए गये । मैं नहीं समझता कि यह कोई स्वस्थ प्रवृत्ति है, हमें इसको निरुत्साहित करना होगा ग्रौर यह तब तक सम्भव नहीं है जब तक सभी राजनैतिक दल यह निश्चय न करें कि वे अपने राजनैतिक उद्देश्य की पूर्ति के लिये विद्यार्थियों को मोहरा नहीं बनायेंगे ।

अन्य देशों में विद्यार्थी राजनीति में भाग लेते हैं लेकिन उनका वह भाग लेना केवल अध्ययन तक, चर्चा तक, सीमित रहता है। इग्लैंड में कंजरवेटिव पार्टी के क्लब हैं, लेबर पार्टी के भी क्लब कालिजों में चलते हैं, अमे-रिका में भी कई रिपब्लिकन पार्टी के क्लब हैं जो कि कालिजों में चलते हैं, डेमोक्रेटिक पार्टी के क्लब भी चलते हैं , मगर कहीं भी विद्यार्थी इस तरह से राजनीति में भाग लेने के लिये प्रेरित नहीं किये जाते जिस तरह से हमारे यहां किये जाते हैं । मैं अमेरिका के एक कालिज में गया था ग्रौर वहां मैंने विद्यार्थियों से पूछा कि इस नगर के जो राजनैतिक नेता हैं उनसे ग्रापका क्या सम्बन्ध है तो एक विद्यार्थी ने उत्तर दिया कि उन राजनैतिक नेताग्रों से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है । मैंने उन से पूछा कि अगर वे राजनैतिक नेता कहीं ग्रापके कालेज में ग्रा जायें ग्रौर अपना उपदेश देने लगें तो ग्राप क्या करेंगे? तो उन्होंने कहा कि हम उनको पकड़ कर खिड़की से बाहर फेंक देंगे । हो सकता है कि इसका कारण यह हो कि अमेरिका एक

समृद्ध देश है और वहां राजनीति के साथ जीवन की हर एक समस्या नहीं जुड़ी हुई है।

SHRI P. N. SAPRU (Uttar Pradesh): May I interrupt the hon. Member just to point out that in the British Universities, the leaders of political parties are invited and the leaders consider it their duty to keep themselves in touch with the yoUth of the country since it is from the universities that they will get their future leadership?

SHRI RAMPRASANNA RAY (West Bengal): Do they take part in active politics?

SHRI P. N SAPRU: Yes, but not in direct action. The students even take interest in elections. They canvass for elections.

MR. CHAIRMAN: Thank you, Mr. Sapru. That will do, no conversa-

श्री ए० बी० वाजपेयी : मैं एक बात स्पष्ट कर दूं। मैंने प्रारम्भ में यह निवेदन किया कि विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को जो बालिग हैं और मत देने का अधिकार रखते हैं, उन्हें इस प्रस्ताव की परिधि में नहीं लाया जा सकता है।

श्री शीलभद्र याजी (बिहार): यह प्रस्ताव में कहां लिखा हुआ है ?

श्री ए० बी० वाजपेयी : आप, जो मैं कह रहा हूं उसे भी सुनिये। आप लिखा हुआ ही पढ़ते हैं या बोला हुआ भी सुनते हैं ? मैं प्रस्ताव की व्याख्या कर रहा हूं, उसकी समरी बता रहा हूं।

MR. CHAIRMAN: Shri Vajpayee started with that statement and now he is explaining it.

SHRI A. B. VAJPAYEE: Perhaps the hon. Member was late and was not here then.

प्रश्न राजनैतिक दलों के नेताओं का विश्वविद्यालय में जाकर भाषण देना. . .

SHRI BHUPESH GUPTA (West Bengal): When you went to their university, did you ask the Americans . . •

SHRI A. B. VAJPAYEE: May I request my hon. friend to defer hi« questions till I_ have finished my speech?

MR. CHAIRMAN: I think Mr. Vajpayee should be allowed to finish *hit* speech.

श्री ए० बी० वाजपेयी : मैं आपसे निवेदन कर रहा था कि प्रश्न विद्यार्थियों और राजनैतिक दलों के नेताओं में सम्पर्क रखने या न रखने का नहीं है। विद्यार्थी निकट सम्पर्क में रहेंगे और रहना भी चाहिये। प्रश्न यह है कि क्या राजनैतिक दल विद्यार्थियों का अपने दलों का प्रचार करने के लिये उपयोग करें। कोई राजनैतिक नेता विश्वविद्यालय में जाकर भाषण करे, विश्वविद्यालय की ओर से किसी गोष्टी का आयोजन किया जाय जिस में भिन्न भिन्न राजनैतिक दलों को अपने विचार प्रकट करने के लिये बुलाया जाये, इसम कोई आपत्ति नहीं है। मगर किसी विश्वविद्यालय का विद्यार्थी किसी राजनैतिकदल का मेम्बर बनाने की रसीद लेकर घूमे और मेम्बर बनाये और वह किसी दल कासक्रिय पदाधिकारी हो जाय और पढ़ाई एक तरफ छोड़ दे और उस दल का प्रचार करे तो इससे अच्छा है, वह विश्वविद्यालय छोड़कर राजनीति के क्षेत्र में आकर काम करे। लेकिन जब तक वह सरस्वती के मंदिर में है, विश्वविद्यालय की सीमा में है, वह विद्यार्थी है। उस पर कोई मर्यादाएं होनी चाहियें और ये मर्यादाएं वे अपने ऊपर नहीं लगा सकते। मैंने इस प्रस्ताव द्वारा विद्यार्थियों को कुछ नहीं कहा है। जो ऐसे लोग हैं, जो राजनैतिक दल चलाते हैं, जो केवल आज का विचार नहीं करते, आने वाले कल के भारत का भी विचार करते हैं, उनको इस बात को सोचना होगा कि क्या राजनैतिक दल के

[श्री ए० बी० वाजपेयी]

रूप में वे विद्यार्थियों को अपना खिलौना बनाएं ? मैं नहीं समझता इस प्रश्न का उत्तर कोई भी हां में दे सकता है ।

SHRI M. M. S. SIDDHU (Uttar Pradesh): May I interrupt, Sir?

SHRI A. B. VAJPAYEE: No, Sir.

MR. CHAIRMAN: No, if you can avoid it.

SHRI M. M. S. SIDDHU: Only one question.

MR. CHAIRMAN: Let him proceed with his speech. I think he is disturbed.

SHRI A. B. VAJPAYEE: All sorts of questions are cropping up.

इस संबंध में एक बात हमें और भी ध्यान में रखनी चाहिये । अभी तक हमारे देश में राजनीति का स्वरूप मुख्यतया आंदोलनात्मक रहा है । स्वाभाविक है, स्वतंत्रता के बाद यह स्वरूप बदले और रचनात्मक बने । विद्यार्थियों का राजनीति में भाग लेने का एक दुष्परिणाम आज स्पष्ट है कि विद्यार्थी विद्या के क्षेत्र में उत्पन्न होने वाली समस्याओं का भी आन्दोलनात्मक तरीके से हल करना चाहते हैं । जैसे अगर दिल्ली से गाजियाबाद जाने के लिये वक्त पर कोई रेलगाड़ी नहीं चलती तो विद्यार्थियों का एक प्रतिनिधिमंडल आकर रेलवे मंत्री से निवेदन करे, इसके बजाय विद्यार्थी सीधी कार्यवाही करना ज्यादा पसन्द करते हैं, वे स्टेशन पर रेलगाड़ी की जंजीर खींच लेंगे और रेलगाड़ी को ढाई घंटा रोक कर अपना विरोध प्रकट करेंगे । मैं विद्यार्थियों को इसके लिये दोष नहीं देता । दोष उस मनोवृति का है जो हमने पैदा की है और हम स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद भी उसको बदल नहीं सके । अगर राजनीति केवल आंदोलनात्मक है और विद्यार्थी ऐसी राजनीति में रुचि लेते हैं तो फिर वह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का समन्वित विकास नहीं कर सकती । आखिर शिक्षा का उद्देश्य क्या है ? केवल डिग्रियां प्राप्त करना नहीं है, व्यक्तित्व का समन्वित विकास करना है और अगर व्यक्तित्व में, दृष्टिकोण में, रचनात्मक भाव नहीं है, अगर जोड़ने का भाव नहीं है, तो तोड़ने का भाव है, और रचना की दृष्टि नहीं है विध्वंस की दृष्टि है, तो यह फिर विद्यार्थी के समन्वित व्यक्तित्व के विकास में सहायक नहीं हो सकता और जब हम विद्यार्थियों में इस प्रकार की प्रवृत्ति को निरुत्साहित करने की बात करते हैं तो यह आवश्यक है कि राजनैतिक दल नाबालिग विद्यार्थियों से अपने हाथ अलग रखें । चुनाव पांच साल में आता है और चुनाव में जो हलचल होती है उस हलचल से विद्यार्थियों को बिल्कुल अछूता नहीं रखा जा सकता । राजनैतिक दल आपस में बैठकर इस बात का फैसला कर सकते हैं कि वे छोटे छोटे बच्चों का चुनाव में उपयोग नहीं करेंगे, जो विद्यार्थी हैं उनको वे पोलिंग एजेंण्ट नहीं बनायेंगे, उनसे चुनाव में सक्रिय सहायता नहीं लेंगे । राजनैतिक दल अगर चाहें तो यह भी निर्णय कर सकते हैं कि विश्वविद्यालयों में, कालेजों में जाकर अपने दल की शाखायें नहीं खोलेंगे । विद्यार्थियों के संगठन चले, विद्यार्थी संगठन विद्यार्थियों की समस्याओं को लें, वे संगठन राजनैतिक और राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति भी जागरूक रहें, यह आवश्यक है । हम विद्यार्थियों को कुंएं का मेंढक नहीं बना सकते, उनके जीवन को एकांगी स्वरूप नहीं दे सकते, हम विद्यार्थियों की राजनैतिक, आर्थिक गतिविधियों को अलग नहीं रख सकते और इस प्रस्ताव का उद्देश्य उनको अलग रखने का भी नहीं है । लेकिन जो बात विचार करने के लायक है वह यह

है कि क्या विद्यार्थी एक गुट के नाते राजनैतिक क्षेत्र में अपना प्रभाव काम में लाने के लिये उभारे जायें और अगर यह मर्यादा लगानी होगी तो राजनैतिक दलों के ऊपर लगानी होगी और मैं समझता हूं कि इस संबंध में विचार करने का आज मौका आ गया है।

अभी जब राष्ट्रीय एकता परिषद् की बैठक हुई तब हमने विद्यार्थियों के लिये आचार संहिता का विचार किया था कि विद्यार्थी किस तरह से आचरण करें, अपने विद्यालय में नहीं तो विद्यालय के बाहर इस संबंध में आचरण का कोई मानदंड होना चाहिये। राष्ट्रीय एकता परिषद् ने यह काम विश्वविद्यालयों के ऊपर छोड़ दिया है और मुझे विश्वास है कि जो शिक्षा के क्षेत्र के अधिकारी हैं, विश्वविद्यालय और कालेजों के संचालक, वे इस संबंध में विचार करेंगे। लेकिन केवल विद्यार्थियों पर छोड़ने से काम नहीं चलेगा। राजनैतिक दल की भी एक जिम्मेदारी है। विद्यार्थी आचरण संहिता न बनाएं तो राजनैतिक दल ही एक आचरण संहिता बनायें। अभी तक जो हो गया उसको हम भुला दें और एक नए अध्याय का श्रीगणेश करें। सब राजनैतिक दल मिल कर इस बात पर विचार करें कि अंततोगत्वा भारत को कैसे विद्यार्थियों की आवश्यकता है? हमें देशभक्त चाहियें या पार्टी भक्त चाहियें? हमें एक विशेष विचारधारा से लगा हुआ विद्यार्थी चाहिये या सारी विचारधाराओं के संघर्ष से ऊपर उठ कर और देश की सेवा के लिए सर्वस्व का समर्पण करने वाला विद्यार्थी चाहिये? आखिर राजनैतिक दल आएंगे, चले जाएंगे, सरकारें बनेंगी, बदल जाएंगी, इस देश में अनेक परिवर्तन आयेंगे। मगर एक बात निश्चित है कि काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक फैली हुई यह भारत भूमि जिसमें संतान के रूप में निवास करने वाली यह ७४ करोड़ जनता रहती है, वह भूमि ही एक स्थायी तत्व है, राजनैतिक दल नहीं। व्यक्ति पैदा होते हैं, मर जाते हैं। राजनैतिक दल भी उपयोगी होते हैं, एक उद्देश्य की पूर्ति करके या तो मिट जाते हैं या अंतिम सांसें लेते हुए मिटने की तरफ आगे बढ़ते हैं। मगर यह समाज हमारा चिरस्थायी है, यह देश हमारा अमर है और इसलिये भारत के भावी नागरिक में इस देश के लिये निष्ठा पहले पैदा हो, समाज हित के लिये काम करने की भावना जागे, यह आवश्यक है। बाल्यावस्था में, अपरिपक्व अवस्था में उसके व्यक्तित्व को बांध दिया जाये, वह राजनैतिक दलों में अपने को विभाजित कर दे, राष्ट्रीय समस्याओं पर दलबंदी से ऊपर उठ कर सोच न सके, यह स्थिति बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण होगी और मैं समझता हूं कि आज आवश्यकता इस बात की है कि हम उस प्रवृत्ति को रोकने के लिये कदम उठाएं। मैं जानता हूं, इस मुल्क में अनेक कठिनाइयां हैं—दोषारोपण किये जा सकते हैं, एक दल दूसरे दल पर यह आरोप लगा सकता है कि हम तो उत्तेजना नहीं देते मगर आप उत्तेजना देते हैं। मेरा निवेदन है, इन दोषारोपणों का उल्लेख करके हम अपने उत्तरदायित्व से बच नहीं सकते।

आवश्यकता इस बात की है कि हम इस सम्बन्ध में एक मौलिक दृष्टि से विचार करें और समय आ गया है कि अपने विद्यार्थियों के सामने एक नई दिशा को रखें। यह दिशा राष्ट्र के निर्माण की दिशा है। राष्ट्र का निर्माण केवल राजनीति से नहीं होता है, राष्ट्र के निर्माण के और भी साधन हो सकते हैं। लेकिन सस्ती प्रसिद्धि, यश की कामना और राजनीति की चमक दमक, आकर्षण, लोभ, ये विद्यार्थी के मन

[श्री ए०बी० वाजपेयी]

को आज सरलता से अपनी ओर आकृष्ट कर सकती है। सेवा का मार्ग और दीपक की तरह से आपको अपने को अन्धकार में जला कर प्रकाश करने का मार्ग, चन्दन की तरह से अपने को मिटा कर सुबास पैदा करने का मार्ग, आज हमारा विद्यार्थी अपनाना नहीं चाहता और यही कारण है, स्वतंत्रता काल में जिस विद्यार्थी समुदाय ने बलिदान की महान परम्परा का निर्माण किया, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जैसे वह अपने मार्ग से भटक गया है, वह दिग्भ्रांत हो गया है। भावी जीवन उसके सामने प्रश्न वाचक चिह्न बन कर खड़ा है। इसका एक ही कारण है कि हम स्वाधीनता के बाद भा उसके सामने कोई आदर्श नहीं रख सके और इसका दोष विद्यार्थियों पर नहीं है, राजनीतिक दलों पर है। इसलिये मैंने यह प्रस्ताव रखा है कि राजनीतिक दल इस सम्बन्ध में विचार करना प्रारम्भ करें ?

The question was proposed.

SHRI BHUPESH GUPTA: Sir, I beg to move:

1. "That after the word 'major* the word 'secular' be inserted."

2. "That after the words 'active polities', the words 'based on communalism' be added"

The questions were proposed.

MR. CHAIRMAN: Under rule 142 of the Rajya Sabha rules, there is a time limit of half an hour for the mover and the Minister concerned and fifteen minutes for the other Members.

SHRI BHUPESH GUPTA: Mr. Chairman, I have given this amendment to make it more practicable, understandable, reasonable and helpful to the country. That is why I say, since my hon. friend is interested in having some kind of Resolution, let it be like that, that is,

"The House is of opinion that Government should convene a conference of the representatives of major secular parties in the country . . .

I add the word "secular" here.

". . . with a view to arriving, at an agreement for keeping students out of active politics based on communalism."

One can understand this because communalism is an utterly outdated and atrocious concept and whether it is in the philosophical life, whether in the cultural life, whether in the political life or in any other sphere of life, communalism is a dangerous thing. Therefore, whatever may be our other disagreements in the matter of politics or economics, it is possible for us, representatives of the various parties to sit together in a conference to discuss how we should keep students out of communal politics because communal politics is disruptive of national unity. It disintegrates the democratic fibre of our life and bars-the way to economic and social progress and leads to the growth of the forces of obscurantism and utter reaction. Since we are all committed to having a progressive policy, since w_e look forward to going forward in our march towards our destiny, I think we can deal with communalism and ask the students to keep out of it. I think nobody in the country-today would like to rediscuss the question of *sati-daha*—at one time it was thought to be something very good by some people but later on it was rejected by society and today nobody talks about it—and likewise communalism should be made such a thing that one should feel ashamed to talk about it. Naturally, if the elders feel ashamed, they should advise the younger generation to shun it' at all costs and not to have any truck with it. I do not know* if Mr. Vajpayee will join with me in evolving ways and means of keeping the young community, the students, out of communal politics of all. kind

Evidently, he has not applied his mind to it. He wants the students to be kept out of politics; then our politics will be dominated by superannuated politicians, by people who have served their term of life and seek some kind of retirement somewhere either in certain leadership of a party or in the Ministry or in some other' place. We do not accept that proposition. Active politics, if it were right before independence, it is right even today because the political life of the country flows and in that flow of the stream, we find people appearing and re-appearing, classes appearing and re-appearing in different roles with different ideologies, shaping the destiny of men. Why on earth then should the younger generation of our country,, especially the enlightened section of our country, the youth, the students, be kept out of it? Who shall shape the political life of the country? Who shall shape the political affairs of the country? Why should the students be isolated from them and why should the entire community be confined only to some kind of cultural and academic activity? Would you advise the student community in Portugal or in Pakistan to keep out of politics so that on the one hand the Salazar regime can continue to thrive and on the other hand the people there continue to be cowed under the tyrannical rule? Would you advise the same thing to the student community of Pakistan where democracy has got to be founded? You know that from the great student community of Pakistan in Dacca came time and again a challenge to the present regime which not only extinguishes the lamps of culture and education but even suffocates the entire life of the community. Are they to blame? Who will continue, for example, the Pakistan politics? Maybe that you would understand it better. Do you expect those former leaders of the Muslim League and others to take the destiny In[1] their hands, sit together with some of the leaders of some other parties to counsel the valiant student community of the University of Dacca and the student community of Karachi to keep out of active politics or is it the duty of the democratic leadership in Pakistan to tell the student community that, in the shaping of the future of the country they have an important part to play? Thus, in connection with the affairs of the State also this question comes up.

Now, I can understand the concern of my hon. friend, Shri Vajpayee, because fortunately or unfortunately, I do not know how he would take it, he belongs to a party whose ideology is particularly rejected by the student community because the stude nt community is a growing, robust community in our society and they have rejected the ideas of communalism, obscurantism and retrograde ideas of all kinds. That is why even while certain parties in the country are getting some support among the Rajas and Maharajas and the feudal places or in the communal sections of the population which have very communal influence, they do not make any headway among the enlightened sections of the community, the rising section of the community, namely, the students. Is it because grapes are sour or is it because of something else? Now, you, Mr. Chairman, had been to Germany and certainly you are more acquainted with German affairs in the old days than I am. Hitler was the man who once had said, kitchen, creche and kinder which, if the German thing is right, means children. That was the task assigned to women. His line was that women must not participate in politics. He prescribed that their job was in the Kitchen, on the creche and among the children. That suited him very well. Today the projection of that philosophy, that retrograde approach, we see in the case of our Jana Sangh friends, who now tell us that students must be kept out of active politics.

[Shri Bhupesh uupta.j What is passive politics, I should like to know. He was mentioning about the British Universities. I had "been a student of the British University; I was in that University-WHen I was a student, we tried to form an Indian Society there but the University authorities did not allow it at first. Then the progre ssive sections of the student community came forward in support of Indian students, fought out the battle politically and compelled the authorities to allow the Indian students to form that society. And I may mention in this connection that Prof. Haldane and even Mr. Gaitskell who is now leader of the British Labour Party and who at that time was a lecturer in the University College where I was a student, joined with the Indian community in getting that thing done. Then recently in the Cambridge Union elections we have seen that Mr. Pollit, .son of the late Harry Pollit, General Secretary of the Communist Party, has been elected as the Union President despite all kinds of politiking on the part of the conservative elements. What are we to do? Should we hand over the universities to the tories and conservatives or should the progressive sections of the student community come forward and take them and spread progressive ideas among the students? Here in our country I do not know what the Congress Party is thinking but if you think that we are a Party in the country, the Communist Party, you shall never get us to a conference to discuss this preposterous proposition of banning aetive politics as far as the students are concerned. On the contrary why should our students not show more active interest in politics in our country because politics lies at the crux of the whole thing? Does it mean they become bad students? Well, they don't. As far as our experience is concerned, we find the Communists had been good students and some of them had topped the list*.

That is my experience. If I find that the Communists were bad students, communism meant being bad students, I would perhaps have considered gome such step in order to have good students but I am happy to ttate before the House that most of our students who come to our party

seem to be good students and when they join the Communist Party they become even better students. It is absurd to say that participation in politics makes you forget everything. Certainly they give up obscuranist ideas, reactionary ideas, revivalist ideas, certainly they look forward to the changing world and try to adjust themselves to the promptings of the times. But does it make them less enlightened, less intellectually vigorous, less forward looking? Not at all. Mr. Chairman, I may give you an example. Before independence the liberals used to say that the students should not take part in politics, let alone the toadies of the British. When I was a student in the school, my Headmaster one day called me and told me that I should take part in politics only after I had passed my M.A. examination; then I was a student in class IX as it used to be called at that time. He told me that he was giving me advice in the name of Indian culture, in the name of so many other things. He said that to fight the British and to work for the independence movement was not the job of immature people. Do you know what he told me then? He told me: "What can you do if the British throw a bomb—and they have many bombs with them—because a radius of 33 miles will be wiped out?" He was trying to frighten me but I told the Headmaster that in that case his house would also be wiped out because it fell within that radius. Such absurd things used to be said. Of course then T went to jail at that time and I did not come to grief for it. Therefore this is a wrong proposition. This is an idea which suits the reaction.

Those who are conservative, those who do not want the vigour of life, the energy of youth, the forward outlook of the young generation of our people to be brought in for shaping the destiny of the country, want students to be shut out of politics so that the conservative element, banking on the backwardness, prejudices, communalism and the reactionary ideas and things of the past can pull back the progress of the society. That is the crux of the matter. Therefore, Madam, (Laughter). Mr. Chairman, I speak more when she is there in the Chair; and when she is addressed 'Sir' I don't laugh.

That is why I say we are strongly opposed to this. We are opposed to it because it is a conspiracy, a move oil the part of reaction to prevent the students from *comii^g* into political activity so that democratic life in the country may not get strengthened. Therefore I say this Resolution is utterly misconceived and it is unfortunate that a Member from the Opposition should have brought it up. I can understand his discomfiture at the development of the student politics today. Sir, I can tell him and this House that by and large out student community do not take part in communal activities. Whenever there have been communal riots and incidents, may be individuals have taken part here and there, but the students as a community with their youthful-ness of mind have gone together in a brotherly spirit hand in hand to bar the road to the evil of communalism or provincialism. That is the picture that we have got today. Therefore do not defame the student community. They are the strongest bulwark we have against communalism, against provincialism. They are the lever for national integration. They are the instrument which should be equipped with modern ideology, given the right spirit and activised into our political life in such a manner that they fulfil the cherished goal of national integration and the advancement of the counrty. So I would ask nim to accept my amendment ana neip us in the task of national integration which he evidently cherishes in his speech at least and to see that our young generation are freed from the hands of communal politics and obscurantist ideas and put on the path of democratic progress and advance.

Thank you.

SHRI T. S. AVINASHLINGAM CHETTIAR (Madras): Mr. Chairman, I understand that Mr. Vajpayee is a very eloquent speaker in Hindi but unfortunately I do not understand that language very much and I am graceful to Mr. Channa Reddy for having translated to me the very fine sentiments that he mentioned in his speech. Sir, despite what the leader of the Communist Party has said, I should think—as Wordsworth said, the world is too much with us— it is true that in our schools and colleges politics is too much with our students. When I mention students, I mean the educational system. Recently we had occasion to discuss two Reports of Enquiry Committees on Central Universities and we had also occasion to discuss an amending Bill. And Dr. Shrimali said in no uncertain terms that one of the evils of the working of the Aligrah University was too much politics in the staff, in the students and in the set up of that University. When we mention to the students 'hands off from politics' we do not mean that they should not discuss political matters. They should discuss. Intellectually they must understand what these various political parties stand for, the ideologies of these political parties. Personally I will not be against leaders of political parties delivering balanced speeches and setting up their own programmes among the students. I do not mind it, that is, the intellectual part of the political life of the country. But what we do want to ban is that parties should work among the students, not for the welfare of the students but for their own petty, small welfare. Everybody agrees that parties

[Shri T. S. AvinashilingamChettiar.] should educate students for national service That I do not consider as politics. That I consider to be an ideal, that is necessary and that is the essence of life. But contrary to that is to use those young minds for their own petty successes in petty elections and in the course of that use them in giving ideas to them which are anti-national, maybe on the grounds of community, maybe on the grounds of petty castes, maybe on the grounds of language, maybe even on grounds of sects, and all that they mean. That is the evil and that is what we mean by politics. This word requires definition. The other day my hon. friend, Mr. Sapru, raised a point. Mr. Bhupesh Gupta also said that in Cambridge people are invited. We are not against inviting people to talk on political principles and- programmes. So, what we really require today Is to define what the sponsor of the Resolution means by politics. People may have a different sense of the word. What Mr. Sapru meant by politics is entirely different from what Mr. Vajpayee meant by politics, when both used the same word. Once we understand the meaning of this word, then, I think, there will be unanimity of agreement on a certain amount of politics, which means .ujnderstandiir^g the higher principles as good for all. But that thing which commonly goes by the name of politics is inducing people to act for lower, lesser and smaller objectives, making them indisciplined by pulling alarm chains, travelling without tickets, etc. No politician will accept that he is inducing them to do that. The acts of politicians may have created a sense of indiscipline, which in their turn have created these evils. I know and it is common knowledge that in some universities, more in Northern India than in Southern India, the students' camps are divided on political grounds. A man is respected not because he has character A man or a woman is elected in a •tudents' election not because he is efficient, not because he is honest, not because of his integrity, for which men are given training to have respect for human qualities. Instead, somebody is elected as the president of the union because he belongs to a political party, because the political party wants that union to be influenced in a particular direction. That is introduction of politics into the students' field, It is unfortunate. No work ,among students can be done without setting same teachers to share in that work; in the task and the affairs of the universities, we find that if the students are bad, no college suffers from indiscipline if all the teachers think together and work together. But whenever there is a quarrel among the teachers, whenever there is a difference among the teachers, whenever .there is disunity among the teachers, then there are people who want to exploit their political feelings. Then, politics getsr onto colleges, into universities. So, it has a wider complexion than mere students. It means our educational institutions. It means they stop the administrators and all people who have something to do with the running of" educational institutions.

Now, I come to another point. Undoubtedly it is true today more than at any time in the last twenty years that money and caste have a much greater pull with the people. Time was when any worker, who sacrificed himself in ftho, cause of the country, who worked for the good of the country, without any money and regardless of caste, could be got elected from any constituency. Today why is it that every political party— I do not absolve any political party of that— whenever they set up candidates go into the issue of the constituency, as to which caste forms the majority of the constituency? Is it Muslim, is it Hindu or is it a sub-caste among Hindus? Is it Reddi, is it Kamma, is it Gounder? Today it is done because we think that success means looking into these things. Why is it that this change has come about? The real reason i*

that previously we had an idea and ■we had been fighting for the ideal of securing the independence of the cou ntry. Nothing else mattered in that idealism. We forgot our caste; •we forgot money. People who spent lakhs of rupees against us got themselves defeated. Today we think money is necessary for fighting elections. Why is it that these things are more influential today? That is because today we have lost that idealism. That loss of idealism is reflected in the student community. Today that student community do not have that idealism very much. I appreciated it when Mr. Vajpayee said that students were engaged in these local borders forgetting our Jiational borders. It is true. If they are patriotic, they must transcend the small group feelings which they have and in doing SQ it js a national effort that we have to make. Our students are the source, «re the foundation of the future of this country. One generation intimately connected with our national struggle, -with Gandhrji, is passing out and in a few years there will be only a few left. Even among the people who once experienced it, we do not find that idealism today, of what they felt then, T.Ve have that feeling, that experience, but hereafter even people with that experience will be few. And so it rests upon us, upon the political parties of the country, upon leadership of every kind, that we again inspire idealism in this field. How will we do it? It \s beyond me. This cannot be done by giving a few points. It is a matter of spirit and light. Light lights. A wick that does not burn cannot light other lamps. We must be able to throw up leaders who can transcend these small things. And in that context I would say that it depends on our political parties, to whichever group they belong. Perhaps it is too much to expect that. It depends on the devotion we have for our country, whether we love our party more or whether we love our country less; whether we love our country more and ourselves less.

That is the question which every political party has to answer here.One word ore, Sir. While 12 Noon I entirely agree that this is a matter over which we must think, contemplate and decide, I do not know why a national conference should be convened. I think we have bodies like the Standing Committee on Education, the Consultative Committee on Education, the Planning Committee for our own Party, and so on, and then we have the National Integration Council. I would suggest that this yery important question should be discussed by us and the problems understood with a view to finding a solution.

1

HEFERENCE TO PROPOSED STATEMENT ABOUT SUGARCANE . PRICE FOR 1962-63

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FOOD AND AGRICULTURE (SHRI RAM SUBHAG SINGH) : Yesterday I had sought your permission to make a statement regarding the fixation of sugarcane price for the year 1962-63. But we decided this morning not to make this statement, and I requested you also and you had kindly allowed me not to make it. So I am not making the statement

RESOLUTION *RE* KEEPING STUDENTS OUT OF ACTIVE POLITICS

PROF. A. R. WADIA (Nominated): Mr. Chairman, there are few propositions which I would support more willingly and more strongly than the proposition which has been moved today by Mr. Vajpayee. I had my doubts about the Communist Party and especially Mr. Bhupesh Gupta. I wonder why he has bothered to send even two amendments when his whole speech showed that he was entirely against the whole idea of keeping our students away from politics.